नाम - दिवयांश राणा
विद्यालय - आनंद निकेतन मनिनगर

दिनांक - 10/2/24
क्लास - 8-A

1st

सतत भविष्य की दिशा मे स्कूलो का योगदान

सतत भविष्य में स्कूलो का बहुत महत्वपूर्ण योगदान हैं। बच्चे शिक्षा विद्यालय से प्राप्त करते है। जो विद्यालय मे पढ़ाया जाता हैं बच्चा उसे ही सीख के तौर पर ~~समझ~~ समझ लेता है। अगर विद्यालय बच्चे को सतत भविष्य की दिशा मे ज्ञान दे तो बच्चे सतत भविष्य का सपना पूरा करने मे अपना योगदान देंगे। छोटे बच्चो को सतत भविष्य के बारे में सूचित करने के लिए कुछ ऐसे तरीको का प्रयोग किया जा सकता हैं जिसे बच्चे खेल-खेल मे ज्ञान की प्राप्ती कर सके। सिर्फ बच्चो को ज्ञान देना ही काफी नहीं है स्कूल कैंमपस मे ~~कोई~~ सफाई, ~~पेड़-पौधो~~ पेड़-पौधो को लगाना, और कर्मचारीयों को भी सतत भविष्य के बारे मे सूचित करना चाहिए। सतत भविष्य के लिए देश प्रेम ~~कि~~ की भावना भी आवश्यक हैं। देश प्रेम ~~x~~ की बातों से मुझे रामधारी सिंह दिनकर जी कि चंद पंक्तियां याद आ गई। "जो भरा नहीं भावो से, जिसमें बेहती रसधार नहीं वह हृदय नही पत्थर हैं, जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं।"

सतत भविष्य के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का ज्ञान होना आवश्यक है। विद्यालय मे विज्ञान लैब और ~~कम~~ कमप्युटर लैब होना चाहिए। आज के ज़माने में ~~प्रौध~~ प्रौद्योगीकी का महत्व पूराने ज़माने के मुकाबले बहुत बढ़ा है। सतत भविष्य के लिए विद्यालय बच्चो को कुछ चंद बाते ~~बाते~~ बता सकता है:-

→ गीला और सूखा कचरा सफाई कर्मचारी को अलग करके देना।

→ कार पूल्लिंग को बढ़ावा देना।

→ जल का ~~सदुउपयोद~~ सदुउपयोग करना।

→ खाना बर्बाद नहीं करना।

पर सिर्फ स्कूल ही सतत विकास के लिए ज़िम्मेदार नहीं है, हम भी हैं। कुछ चंद बातो का ध्यान रखकर हम सतत विकास का सपना पूरा कर सकते है। अगर सारा विश्व एकजुट होके कोशीश करे तो सतत ~~विकास~~ भविष्य की प्राप्ती अवश्य होगी।

"कोशीश करने वालो की कभी हार नहीं होती,
लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।
- हरिवंश राय बच्चन

इन पंक्तियों के साथ में यह निबंध समाप्त करुंगा।

धन्यवाद